(राग-काफी - ताल: दीपचंदी)

कोणी दुजा नसे त्राता।।३।।

पद २२

भासे। मृगमद चर्चिलें माथा।।२।। मनोहर म्हणे जगतामाजिं।

कां न दया येत आतां। माणिका अवधूता।।ध्रु.।। मुक्ताफळ हार

कंठींचा शोभे। कटकादि घातले हाता।।१।। शुभ्रवसन तें दैदिप्य